सुनहरा
98 वाँ वर्ष

आज

हिन्दी जगत में
सर्वाधिक लोकप्रिय

साउथ की एक्ट्रेस के मोटापे का उड़ाया मजाक..9 | विधानसभा के सामने गन्ना किसानों...2 | विराट की निगाहे सिरीज पर...12

www.ajhindidaily.com लखनऊ, रविवार , 29 अक्टूबर, 2017 • नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य 2 रुपये | वाराणसी, गोरखपुर, इलाहाबाद, (मध्य प्रदेश संस्करण), कानपुर, (झांसी संस्करण) , लखनऊ , आगरा, बरेली, पटना, रांची, (धनबाद संस्करण) तथा जमशेदपुर से प्रकाशित

इंजीनियर्स सभागार में इलेक्ट्रानिक कचरे पर परिचर्चा का दीप जलाकर उद्घाटन करते डा. डीके श्रीवास्तव।

एक मोबाइल फोन की बैटरी छह लाख लीटर पानी कर सकती है दूषित

(आज समाचार सेवा)

लखनऊ, शनिवार। द इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियर्स ने ऑल इंडिया सेमिनार ऑन इलेक्ट्रॉनिक वेस्ट सेमिनार आयोजित किया देशभर

उचित ढांचे कानून और रूपरेखा के अभाव में ई वेस्ट को रिसाइकिल नहीं किया जाता

के वैज्ञानिकों एवं इंजीनियरों ने हिस्सा लिया चेयरमेन आरएन भार्गव ने कहा कि ई वेस्ट के कारण भूमिगत जल ही प्रदूषित नहीं हुआ हैए बल्कि मिट्टी की भी उर्वरक क्षमता पूरी तरह खत्म हो चुकी है। उन्होंने कहा कि देश में प्रतिवर्ष करीब 50000 टन ई.वेस्ट पैदा हो रहा। इसमें करीब 25 फीसद की दर से वृद्धि हो रही है। वर्तमान में मोबाइल टीवी कंप्यूटर आदि की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। मोबाइल की एक बैटरी से 6 लाख लीटर पानी दूषित हो सकता है एक मोबाइल फोन की बैटरी छह लाख लीटर पानी दूषित कर सकती है। ई वेस्ट से जन्मी गंभीर बीमारियां ई रिक्शा में जिस मात्रा में बैटरी की खपत होती है। इससे आने वाले दिनों में ई वेस्ट की समस्या बढ़ जाएगी। इससे वातावरण विषैला हो रहा है। इसके अलावा कंप्यूटर में घातक शीशा फास्फोरस कैडमियम व मरकरी जैसे तत्व होते हैं। जो जलाए जाने पर सीधे वातावरण में घुलते हैं। कंप्यूटरों के स्क्रीन के रूप में इस्तेमाल होने वाली कैथोड रे जिस मात्र में शीशा लेड पर्यावरण में छोड़ती है वह भी काफी नुकसानदेह होता है। ये खतरनाक रसायन कैंसर आदि कई गंभीर बीमारियां पैदा करते हैं। कार्यक्रम में देश भर से वैज्ञानिक एवं इंजीनियरों ने हिस्सा लिया देश में पांच प्रतिशत से भी कम इलेक्ट्रॉनिक कचरा रिसाइकिल के जरिए दोबारा इस्तेमाल होता है। उचित ढांचे कानून और रूपरेखा के अभाव में ई वेस्ट को रिसाइकिल नहीं किया जाता। यह बात स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंस के डायरेक्टर जनरल प्रोण् भारत राज सिंह ने कही। वह शनिवार को रिवर बैंक कॉलोनी स्थित द इंस्टीट्यूट ऑफ

पांच प्रतिशत से भी कम इलेक्ट्रॉनिक कचरा रिसाइकिल होता है

इंजीनियर्स द्वारा दो दिवसीय श्ऑल इंडिया सेमिनार ऑन इलेक्ट्रॉनिक वेस्ट कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि देश में उत्पन्न 90 फीसदी इलेक्ट्रॉनिक कूड़े का प्रबंधन असंगठित क्षेत्र द्वारा किया जाता है। स्क्रैप डीलर इन उपकरणों को खोलकर रिसाइकिल करने के बजाये फेंक देते हैं। इनमें में से ज्यादातर उपकरणों को रिसाइकिल कर पुन: इस्तेमाल किया जा सकता है। हर वर्ष करीब 50.000 टन ई वेस्ट पैदा हो रहा।